RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 6 जनवरी-फरवरी 2024

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भाक्यन् लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

विषय - सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श	डॉ. अशोक थपलियाल	04
2.	स्थानबल साधन	डॉ. अनिल कुमार	16
3.	कालापानी : भारत - नेपाल सीमा विवाद	आलोक कुमार सौरभ सिंह डॉ. सत्यपाल सिंह	23
4.	ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	28
5.	भारतीय चिन्तन परम्परा तथा काव्यशास्त्रों में अभिधा	डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा	32
6.	शिक्षक-शिक्षा में सीखने की शैलियों का महत्त्व	डॉ. राजकुमारी गोला	36
7.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता का अध्ययन	गौरव कुमार डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	41
8.	मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन	उमरा इदरीस डॉ. राजकुमारी गोला	45
9.	क्या भारतीय बाजार में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली समय की आवश्यकता है?	डॉ. नमिता जैन	49
10.	मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक स्वरूप और अधिगम	डॉ. कालिका प्रसाद शुक्ल	54
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और उच्चशिक्षा का पुनर्गठन	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	58
12.	समय की सार्थकता एक विवेचन	डॉ. अर्चना कुमारी	63
13.	वैदिकसाहित्य में पंचमहाभूतों का अभिचिन्तन	डॉ. मोहिनी अरोरा	65

ISSN 2278 - 0327

ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. मोहन लाल 'आर्य'
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उ.प्र.

सार:-

प्राचीन काल से ही मानव अर्जित अनुभवों को व्यक्त करने के लिये शाब्दिक तथा अशाब्दिक भाषा का प्रयोग करता आ रहा, किन्तु भाषा के माध्यम से समस्त अनुभवों को सम्प्रेषित करना न केवल कठिन था अपितु असुविधाजनक भी था, जिसके परिणाम स्परूप मानव ने इस समस्या के समाधान के लिए अभिव्यक्ति के विभिन्न साधनों तथा उपकरणों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। वैज्ञानिक विकास एवं उन्नति के कारण हमें इस कार्य हेतु नवीन उपकरण प्राप्त हुए तथा पूर्व में उपलब्ध साधनों अथवा संसाधनों के उन्नत तथा परिष्कृत रूप भी प्राप्त हुए जैसे रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ओवर हैड प्रोजेक्टर, ई-मेल इत्यादि। सम्प्रेषण शिक्षण प्रक्रिया का एक अनिवार्य घटक है। इसलिये शिक्षण-प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षक अपनी सुविधा तथा उपलब्धता के आधार पर प्राचीन एवं नवीन शिक्षण सामग्री को कक्षा-कक्ष में प्रयोग करता हैं और अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावीशाली एवं सुगम बनाता है।

मुख्य शब्द:- सम्प्रेषण, तकनीकी, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, इंटरनेट, प्रौद्योगिकी।

प्रस्तावना:-

मानव की बौद्धिक क्रियाओं के लिए उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियाँ उत्तरदायी होती हैं। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से वह नये-नये अनुभव प्राप्त करता हैं और अर्जित अनुभवों को व्यक्त करने के लिये लम्बे समय तक व्यक्ति शाब्दिक तथा अशाब्दिक भाषा का प्रयोग करता रहा, किन्तु भाषा के माध्यम से समस्त अनुभवों का सम्प्रेषण न केवल कठिन था अपितु असुविधाजनक भी था, फलस्वरूप मानव ने इस समस्या के समाधान के लिए विभिन्न साधनों तथा उपकरणों का प्रयोग प्रारम्भ किया। वैज्ञानिक विकास एवं उन्नति के कारण हमें इस कार्य हेतु नवीन उपकरण प्राप्त हुए तथा पहले से उपलब्ध साधनों के उन्नत तथा परिष्कृत रूप भी प्राप्त हुए। ओवर हैड प्रोजेक्टर, रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल इत्यादि वैज्ञानिक उन्नति के ही परिणाम है। सम्प्रेषण शिक्षण प्रक्रिया का एक अनिवार्य घटक है। इसलिये शिक्षण-प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षक अपनी सुविधा तथा उपलब्धता के आधार पर पुरातन तथा अधुनातन शिक्षण सामग्री को कक्षा-कक्ष में प्रयोग करता हैं। ऑनलाइन शिक्षण के लिए एक अत्यंत ही बिखेरने वाली विध्वंसकारी तकनीक हो सकती है। यदि हम इसे ऐसा लागू करते हैं। लेकिन हमें ऐसा करना चाहिए क्योंकि यह स्थापित सिद्धान्तों में परिवर्तन का कार्य करती है जिनको कि शिक्षाविद् पिछली शताब्दी से तर्क देकर बनाए हुए है। सबसे प्रमुख लेखकों ने भी सक्रिया अधिगम के महत्व पर जोर दिया है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक सिद्धान्तों, विधियों एवं उपकरणों का उपयोग होता है। यह एक विस्तृत विषय है इसके अन्तर्गत विभिन्न उपकरणों जोकि तकनीकी पर आधारित होते हैं, का उपयोग किया जाता है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक सिद्धान्तों व उपकरणों का उपयोग शिक्षण प्रदान करने में किया जाता है। जैसे - रेडियो, दूरदर्शन, विडियो, टेपरिकार्ड अत्यादि।

वर्तमान में शिक्षा देने में जो सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी उपकरण है वह है डिजिटल प्रणाली। शिक्षा एवं शैक्षिक प्रौद्योगिकी जहाँ आपस में साध्य व साधन का सम्बन्ध रखते हैं वहीं इलेक्ट्रानिक उपकरण भी शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक है। आज विज्ञान, जीवन के हर पक्ष के साथ साथ शिक्षा एवं शिक्षण प्रक्रिया को भी कम लागत में अधिक उत्पादोन्नमुखी बनाने का प्रयास कर रहा है। सभी कार्यों के होने में विज्ञान का योगदान हो रहा है सभी कार्यों में कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अब कम्प्यूटर युक्त डिजिटल कक्षा का प्रयोग किया जाने लगा है। ऑनलाइन शिक्षण मुख्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कम्प्यूटर समर्थन अंतरण है। ई-शिक्षण को अनुप्रयोगों और प्रक्रिया में वेब आधारित शिक्षण, कम्प्यूटर आधारित शिक्षण, आभासी कक्षाएँ, डिजीटल सहयोग शामिल हैं। पाठ्य-सामग्रियों का वितरण, इंटरनेट, ऑडियो या वीडियो टेप, उपग्रह, टी.वी. और सी.डी. रोम के माध्यम से किया जाता है। इसे खुद-ब-खुद या अनुदेशक के नेतृत्व में किया जाता है और इसका माध्यम पाठ, छवि, एनीमेशन स्ट्रीमिंग वीडियो और ऑडियो है। शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त अत्याधुनिक

शिक्षण माध्यमों में विशेषकर ऑनलाइन शिक्षण का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः अनुसंधानकर्ता द्वारा ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन शोध हेतु चुना गया।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः-

ऑनलाइन शिक्षण हालांकि एक सुलभ और सस्ता साधन नहीं है परन्तु व्यवहारिक ज्ञान को बढ़ाने में यह अति सहायक सिद्ध होता है। आज ऑनलाइन शिक्षण द्वारा दिए गए शैक्षिक कार्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज ऑनलाइन शिक्षण से शिक्षा, फाउंडेशन स्तर से लेकर विश्वविद्यालय एवं शोध कार्यों को करने के स्तरों तक दी जा रही है। इंदिरा गांधी ओपन युनिवर्सिटी, एन.सी.ई.आर.टी. एंव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा न्यूपा द्वारा तैयार शिक्षा के कार्यक्रम कम्प्यूटर द्वारा निर्मित है। हालहीं में कोविड काल में तो शिक्षण का केवल यहीं एक माध्यम बचा था, समस्त राजकीय एवं निजी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य भी इसी के माध्यम से करवाया जा रहा है। इस कारण विद्यार्थियों का इन कार्यक्रमों में आकर्षण बढ़ा है। ऑनलाइन शिक्षण द्वारा तैयार शिक्षण के विभिन्न विषयों के कार्यक्रमों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित जानकारी किस सीमा तक उपयोग एवं रूचिकर है? इसके द्वारा विभिन्न विषयों को कितना भार दिया जा सकता है? शिक्षक इसके माध्यम से विद्यार्थियों को ज्ञान देने में कहाँ तक सफल हुए है? विद्यार्थी इस शिक्षण विधि से कितना लाभान्वित हुए है? इसका अध्ययन करना आवश्यक है। साथ ही यह जानना भी आवश्यक है कि अलग अलग स्तर के विद्यार्थी के लिए, ऑनलाइन शिक्षण द्वारा शिक्षण शिक्षकों की दृष्टिकोण में कितनी उपर्युक्त है? संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विभिन्न स्तर पर पढ़ा रहे शिक्षकों की ऑनलाइन शिक्षण द्वारा शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति क्या है? इसके अध्ययन से जहाँ ऑनलाइन शिक्षण द्वारा शिक्षण प्राप्त करने व देने के मूल्यांकन में सहायता मिलती है, वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम की सरलता का आंकलन भी होगा।

कोई भी शैक्षिक अनुसंधान वास्तविक रूप से तभी सार्थक होता है जब वह शिक्षा एवं समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो। यदि किसी अनुसंधान के किसी भी क्षेत्र में कोई उपयोगिता सिद्ध नहीं होती है तो वह अनुसंधान व्यर्थ होता है। ये शैक्षिक निहितार्थ शोध अध्ययन से स्पष्ट विभिन्नताओं शिक्षा प्रक्रिया की कमियाँ आदि को दूर करने हेतु दिशा-निर्देश प्रदान करते है। शिक्षण व्यवस्था में ऑनलाइन शिक्षण का प्रयोग जैसे-ई-मेल, पॉवर पॉइन्ट एवं वेब इत्यादि, शिक्षण तथा अधिगम प्रक्रियाओं का एक उच्च स्तरीय भाग बन चुका है। परन्तु इसने मुख्य प्रक्रिया पर अच्छा प्रभाव डाला है साथ ही साथ विद्यालयों के बेहतर परिणामों का ऑनलाइन शिक्षण एक हिस्सा बन गया है। ऑनलाइन शिक्षण की नीति, इसके उद्देश्यों तथा इसके प्रभावी प्रयोगों में भी इसकी उपादेयता का पता चलता है। प्रस्तुत अनुसंधान का महत्व शिक्षण क्षेत्र में नवीन अनुसंधान को प्रेरित कर सकेंगे तथा नये अनुसंधानकत्र्ताओं को समस्या के अन्य पहलुओं पर विचार करने तथा नवीन खोजों को अभिप्रेरणा दे सकेंगे, अनुसंधान के परिणामों का उपयोग विभिन्न वर्गों के छात्र-छात्राओं के ऑनलाइन शिक्षण हेतु उनमें आपसी समझदारी एवं सहिष्णुता का विकास करने हेतु भी किया जा सकता है, अनुसंधान से प्राप्त परिणामों के अनुसार भावी शोधकार्यों हेतु आधार प्रदान किया जा सकता है एवं अनुसंधान उपकरणों के वर्तमान सन्दर्भ में पुनरावलोकन के लिए आधार प्रदान किया जा सकता है। आदि निर्धारित किए गये है-

शोध समस्या कथनः-

समस्या का निर्धारण निम्न कथन के रूप में किया गयाः- ''ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन''।

शोध के प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरणः-

1. शिक्षक
2. ऑनलाइन शिक्षण
3. ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति

1. शिक्षकः- आज हमारे समाज में शिक्षक को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया है। किसी भी राष्ट्र में शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा में अपना महत्त्वपूर्ण एवं केन्द्री स्थान रखता है। वह राष्ट्र विकास में योगदान प्रदान करने वाली शिक्षा की तैयारी करता है और उसको क्रियान्वित करने में निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। वह समाज को तेल के दीपक की भांति रोशनी प्रदान करता है। शिक्षक प्राचीन, वर्तमान एवं भविष्य में राष्ट्र का निर्माता रहा है, और रहेगा, वह पथ प्रदर्शक, निर्माणक, संस्कृति वाहक एवं समाज सुधारक है। शिक्षक के सम्बन्ध में डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार ''शिक्षक राष्ट्र के भाग्य के मार्गदर्शक हैं। शिक्षक बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी कौशलों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण करने में धुरी का कार्य करता है। वह सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षक तथा परिमार्जन करता, वह बालकों का ही मार्गदर्शक नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक है।''

2. ऑनलाइन शिक्षणः- ऑनलाइन शिक्षण का सामान्य अर्थ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के माध्यम से शिक्षण एवं अधिगम को संचालित करना है। ऑनलाइन शिक्षण के लिये अन्य पदों यथा ऑनलाइन अधिगम, वर्चुअल अधिगम, वेब आधारित अधिगम आदि का प्रयोग किया जाता है। मूलभूत रूप से उक्त सभी शैक्षिक प्रक्रिया के लिये प्रस्तुत किये जाते है। इन शैक्षिक प्रक्रियाओं में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का प्रयोग शिक्षण एवं अधिगमन की क्रियाओं में एक समय में अथवा अलग-अलग समय में किया जाता है।

3. **ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्तिः-** सामान्यतः अभिवृत्ति का आशय किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण से होता हैं। इसे हम मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कह सकते हैं कि अभिवृत्ति से हमारा तात्पर्य उस दृष्टि से है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था, अथवा किसी स्थिति के प्रति किसी व्यक्ति विशेष के किसी व्यवहार का ज्ञान प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति किसी व्यक्ति की किसी विषय के प्रति उनकी आन्तरिक भावना या विश्वास होती है। अभिवृत्ति व्यक्ति के अर्जित अनुभवों से संगठित होकर उसे गति प्रदान करती है। अभिवृत्ति का निर्माण प्रत्ययों द्वारा होता हैं। अभिवृत्ति के निर्माण में ज्ञानात्मक व भावात्मक आधार होते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः-

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है-

1. ऑनलाइन शिक्षण द्वारा शिक्षा के प्रसार में मिडिल एव माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति ज्ञात करना।
2. ऑनलाइन शिक्षण द्वारा शिक्षा के प्रसार में मिडिल एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँः-

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ बनाई गयीं हैं-

1. मिडिल एवं माध्यकि स्तर पर पढ़ाने वाली शिक्षकों की ऑनलाइन शिक्षण में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. मिडिल एवं माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाली शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. मिडिल स्तर के शिक्षकों और शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों और माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. मिडिल स्तर के शिक्षकों और माध्यकि स्तर की शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. मिडिल स्तर की शिक्षिकाओं और माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की ऑनलाइन शिक्षण में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधिः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शः-

सम्पूर्ण जनसंख्या के आधार पर किसी चर का विशिष्ट मान प्राप्त करने के लिए कुछ इकाईयों का चुनने की प्रक्रिया तथा चुनी हुई इकाईयों का समूह न्यादर्श कहलाता है। किसी भी शोध कार्य को पूरा करने में न्यादर्श का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना असंभव होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मुरादबाद जनपद के मिडिल एवं माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित है। इसके लिये कुल 400 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने अपनी समस्यानुासर, विधिवत रुप से निर्मित किया है। अतः शोध में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिशत, माध्य, माध्य विचलन एवं टी-परीक्षण विधियाँ प्रयुक्त की गई हैं।

शोध अध्ययन का सीमांकनः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल मुरादाबाद जनपद के मिडिल एवं माध्यमिक स्तर विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों तक हीं सीमित रखा गया है।

शोध अध्ययन के निष्कर्षः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है-

1. मिडिल स्तर के शिक्षकों और माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की डिजिटल कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. मिडिल स्तर को पढ़ाने वाली शिक्षिकाओं और माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की डिजिटल कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. मिडिल स्तर के शिक्षकों और मिडिल स्तर की शिक्षिकाओं की डिजिटल कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों और माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की डिजिटल कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. मिडिल स्तर के शिक्षकों और माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की डिजिटल कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
6. मिडिल स्तर की शिक्षिकाओं और माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की डिजिटल कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति में कोई

सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

- 'आर्य', डॉ0 मोहन लाल (2023); 'नई शिक्षा नीति 2020: एक शैक्षिक अध्ययन', Jyotirveda Prasthanam, 12 (2) मई-जून, पेज-89-93।
- आर्य, मोहन लाल (2023); अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान; मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
- 'आर्य', मोहन लाल (2017); अधिगम के लिए आंकलन; मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
- 'आर्य', मोहन लाल (2017); अधिगम एवं शिक्षण; मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
- कुलश्रेष्ठ, डॉ० एस० पी०; शिक्षा मनोविज्ञान, आर० लाल० बुक डिपो, मेरठ।
- कौल, लोकेश (2007), शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली।
- Alekar, A.S. (1962); The Position of Women in Hindu Civilization, Moti Lal Banarsi Das, Delhi.
- Best, J.W. (1981); Research in Education, New Delhi, Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
- Buch, M.B. (Ed.) (1972); Survey of Research in Education Case, Baroda.
- Buch, M.B. (Ed.) (1979); Second Survey of Research in Education, Society of Educational Research and Development, Baroda.
- Buch, M.B. (Ed.) (1987); Fourth Survey of Research in Education, New Delhi.
- Buch, M.B. (Ed.), (1986); Third Survey of Research in Education, New Delhi.
- Buch, M.B., (1974); A Survey of Research in Education, Baroda, CASE.
- Deway, J. (1916); Democracy and Education. Macmillan Company, New York.
- Diaz, R. J., Glass, C. R., Arnkoff, D. B., & Tanofsky-Kraff, M. (2001); Cognition, anxiety, and prediction of performance in 1st-year law students. Journal of Educational Psychology, 93(2), 420-429.
- Garret, H.E. (1987); Statistics in Psychology and Education, Bombay, Vakils Febhar & Simsons Pvt. Ltd.
- Good, C.V. Barr A.S. Scates D.E. (1941); The Methodology of Educational Research, Century Crafts, New York.
- Hess, R., & Holloway, S. D. (1984); 'Family and school as educational institutions'. In R. D. Parke (Ed.), Review of child development research, Vol. 7. The family. (179-222). Chicago: University of Chicago Press.